महात्मा गांधी के दर्शन में शांति पूर्ण सह अस्तित्व की भावना

पूनम रानी
एमए हिंदी (नेट)
हिसार (हरियाणा)

शोध आलेख सार

भारत देश में जन्में महात्मा गांधी जिन्होंने अपने जीवनकाल में अपने कार्यों के कारण प्रसिद्धि प्राप्त की। वे राष्ट्र के जनक थे। उन्होंने देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी एक खुद की पहचान बनाई। उन्होंने सत्य और अहिंसा के बल पर अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया और उन्हीं के योगदान से ही भारत को आजादी मिली। उनका दर्शन एक प्रकार से जीवन, मानव समाज और जगत का नैतिक कल्याण करना है। वे मानते थे जगत में जो कुछ अनैतिक है वह सब हिंसा है। शस्त्र से शस्त्र का, हिंसा से हिंसा का, क्रोध से क्रोध का पराभव नहीं किया जा सकता। उनकी अहिंसा, सक्रिय है। उन्होंने सांम्प्रदायिकता, जातिवाद को समाप्त करने के लिए शांति मिशन की आधारशिला रखी। उन्होंने भारतीयों के लिए ही नहीं विदेशियों के लिए अर्थात संपूर्ण मानवता के प्रति उनके अंदर दया का भाव था। वे मानते थे कि यदि साध्य पवित्र है और मानवीय है तो साधन भी वैसा ही शुद्ध और मानवीय होने चाहिए। ऊंचे-ऊंचे आदर्शों पर, धर्म और नैतिकता पर, मानव के कल्याण की भावना पर अपना जीवन न्यौछावर करने वाले महापुरुषों जैसी उच्चता उनमें दिखाई देती है।

मुख्य शब्द साम्प्रदायिकता, निष्क्रिय, प्रतिष्ठान, तात्क्षणिक, नियंत्रण, धार्मिकता, श्रद्धा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास कर्मचंद गांधी था। उनका जन्म 2 अक्टूबर वर्ष 1869 में गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ। इन्हीं के प्रयासों से हमारा देश 15 अगस्त सन् 1947 को आजाद हुआ। गांधी जी ने हमेशा सत्य और अहिंसा के लिए आंदोलन चलाए। भारत में हिंदू-मुस्लिम दंगों के कारण देश की राजनीति पर भी प्रभाव पड़ रहा था कलकत्ता में साम्प्रदायिक दंगों के कारण हजारों लोग मारे गए। इस खबर के कारण नोआखाली में स्थिति गंभीर हो गई। दिल्ली की वाल्मीकि बस्ती में रुके हुए गांधी जी को नेहरू जी ने बताया कि 'जो लोग कभी साम्प्रदायिकता की बात तक नहीं सोचते थे, वे भी आज साम्प्रदायवादी बन रहे है। हर जगह पागलपन जैसा उन्माद फैल गया है' ।

दो दिन बाद ही नोआखाली से भीषण हत्या का समाचार प्राप्त हुआ। अंत में गांधी जी ने नोआखाली जाने का निर्णय लिया और प्रार्थना सभा में कहा कि 'मैं जिस यात्रा पर जा रहा हूं वह लंबी और कठिन है और मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, अपने मार्ग को सरल बनाने के लिए भगवान पर भरोसा रखना चाहिए। मैं नोआखाली में कोई न्यायाधीश बनकर नहीं बल्कि ईश्वर का सच्चा सेवक बनकर जा रहा हूं। कलकत्ता रेलवे स्टेशन पहुंचने पर उन्हें वहां से 10 मील दूर सोदपुर में खादी प्रतिष्ठान आश्रम में लाया गया, वहां सांय काल की प्रार्थना के लिए लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। गांधी जी ने कहा कि 'मैं कोई योजना लेकर नहीं आया हूं, वह मुझे अगला कदम बताएगा' वह गवर्नर मि. वरोज से मिले। गवर्नर ने पूछा, 'आप मुझ से क्या कराना चाहते हैं?' उन्होंने कहा कि 'कुछ नहीं। मेरा काम मुख्यमंत्री से है, इसी प्रकार पूर्वी कमांड के प्रधान सेनापति से उन्होंने कहा कि सेना का काम मांगने पर मुल्की अधिकारियों की मदद करना है और मुख्यमंत्री तथा उसके मंत्रिमंडल की आज्ञा का पालन करना है। कानून और व्यवस्था की जिम्मेदारी मुल्की सत्ता की है, न की सेना के अफसरों की। '

बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री शहीद सुहरावर्दी थे। आम जनता की दृष्टि में वे नोआखाली के दंगों के जनक थे। गांधी जी ने उनसे भेंट की और कहा कि 'शहीद साहब !

क्या बात है हर आदमी आपको गुंडो का राजा कहता है। शहीद ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि महात्मा जी क्या आपकी पीठ पीछे आपके बारे में लोग तरह-तरह की बातें नहीं करते?'

गांधी जी ने हंसते हुए कहा कि कम से कम कुछ आदमी तो हैं जो मुझे महात्मा कहते हैं। परंतु एक भी आदमी को शहीद सुहरावर्दी कहते नहीं सुना है। गांधी जी के इस वक्तव्य को सुनकर शहीद ने समझ लिया कि वे इस इंसान से प्रेम कर सकते हैं, जो उनके रोम-रोम को जानता है, उसे उनके मुंह पर बताने की हिम्मत रखता है

और फिर भी जिसका स्नेह और प्रेम उनके लिए कम नहीं होता। बाद में शहीद ने बंगाल में साम्प्रदायिक एकता स्थापित करने के लिए एक योजना बनाई जो आगे चलकर नोआखाली शांति-मिशन की आधारशिला बनी। हिंदुओं और मुसलमानों की संख्या समान थी। मुख्यमंत्री ही इस शांति मिशन के अध्यक्ष बने।

पंजाब और बंगाल में रक्तपात तथा गांधी जी का उपवास

15 अगस्त 1947 को जब देश आजाद हुआ तो कलकत्ता में हिंदुओं और मुसलमानों को दल एक साथ ट्रकों और बसों में बैठकर घूमने लगा। उस समय गांधी जी कलकत्ता में ही थे। प्रार्थना सभा में गांधी जी ने कहा कि यदि शहर के इस उमड़ते हुए भाईचारे में सच्चाई है और तात्क्षणिक नहीं तो खिलाफत के दिनों से बेहतर है, मेरा विश्वास है कि कलकत्ता के इस सौहार्दपूर्ण वातावरण का प्रभाव पंजाब व भारत की अन्य जगहों पर पड़ेगा। मैं लोगों को सावधान करता हूं कि अब जब हम आजाद हो गए हैं, हमें अपनी आजादी का उपयोग विवेक व संयम से करना चाहिए। मैं जानता हूं कि अगर मैं कलकत्ता पर नियंत्रण कर सका तो पंजाब से भी निपट सकूंगा। यदि मैं इस समय लड़खड़ाता हूं तो आग फैल सकती है। शांति भंग होने की स्थिति में उन्होंने रात को ही अखबारों में अपने उपवास की सूचना दी और कहा कि जो स्थान कल तक सुरक्षित था वह अचानक असुरक्षित हो गया है। मैंने दो मुसलमानों के शव देखे। जब कलकत्ता में बुलबुला फूटा तो मुझे मालूम होता है कि मैं क्या मुंह लेकर पंजाब जा सकता हूं। आज तक मेरे लिए जो शस्त्र अचूक साबित हुआ, वह उपवास है। यदि कलकत्ता में मेरा उपवास लड़ने वाले सभी तत्वों के दिलों को छू दे तो पंजाब में भी ऐसे तत्वों को छू सकता है। इसलिए मैं आज रात सवा 8 बजे उपवास शुरू करूंगा और यह तभी समाप्त होगा जब कलकत्ता में समझदारी आ जाएगी। यदि कलकत्ता के लोग चाहते हैं कि मैं पंजाब जाकर वहां के लोगों की सहायता करूं तो उन्हें जल्दी से जल्दी ऐसी स्थिति लानी होगी कि मैं उपवास खोल सकूं। 4 सितंबर 1947 को कलकत्ता के 27 व्यक्तियों का एक दल गांधी से मिला जिनका शहर के उपद्रवी तत्वों पर नियंत्रण था। इस दल ने अपराध के लिए क्षमा-याचना की और उपवास खत्म करने की प्रार्थना की। उन लोगों ने वचन दिया कि वे गुंडों को काबू में कर लेंगे। गांधी जी ने कहा कि मैं उपवास तभी तोड़ूंगा जब मेरी आत्मा कहेगी और शहर में शांति स्थापित हो जाएगी। उनकी इस तरह की दृढ़ता को देखकर इस दल ने हिसांत्मक गतिविधियों को नियंत्रित किया। जब गांधी जी को लगा कि वहां शांति स्थापित हो गई है तो उन्होंने अपना उपवास तोड़ दिया।

गांधी जी पर जैन धर्म का प्रभाव

गांधी जी पर जैन धर्म का प्रभाव बाल्यकाल व उनके आगामी जीवन में जैन विद्वानों के साथ, पत्र व्यवहार और ग्रंथों के अध्ययन से पड़ा। मां की जैन संस्कारों युक्त सत्यवादिता, धार्मिकता का उन पर गहरा प्रभाव रहा। उन्होंने स्वयं कहा है कि, जो कुछ पवित्रता मेरे में हैं वह मां से प्राप्त हुई है, पिता से नहीं। जैन धर्म कि मुख्य पहचान व अहिंसावादी धर्म के रूप में है, दूसरी ओर गांधी जी का समस्त दर्शन भी अहिंसा व सत्य पर आधारित है। जब गांधी जी विदेश जाने लगे तो मां को अनुमति देने में परेशानी हुई कि वह विदेश में जाकर मांस आदि का भक्षण करने लगेगा, तब एक मुनि बेचर जी आए और गांधी को मांस-मदिरा व पर स्त्री से दूर रहने की प्रतिज्ञा दिलाई, तब मां ने जाने की अनुमति दी। इस तथ्य को लेकर स्वयं गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि बेचर जी स्वामी मोढ बनियों में से बने हुए एक जैन साधु थे। उन्होंने मदद की और वे बोले मैं इस लड़के से इन 3 चीजों के व्रत दिलवाऊंगा, फिर इसे जाने देने में कोई हानि नहीं होगी । उन्होंने मुझे प्रतिज्ञा दिलाई और मैंने मांस, मदिरा व पर स्त्री से दूर रहने की प्रतिज्ञा की, तब माता जी ने आज्ञा दी।

गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका में क्रिश्चियन सज्जनों से संपर्क

गांधी जी सन् 1893 में दक्षिण अफ्रीका में क्रिश्चियन सज्जनों से मिले। उनका जीवन स्वच्छ था। अन्य धर्मियों को क्रिश्चियन होने के लिए उन्हें समझाना उनका मुख्य काम था। मेरा और उनका संबंध व्यावहारिक कार्यों से लेकर ही हुआ था। तो भी उन्होंने मेरी आत्मा के कल्याण के लिए चिंता करना शुरू कर दिया। उस समय मैं अपना कर्तव्य समझ सका कि जब तक मैं हिंदू धर्म के रहस्य को न जान लूं और मेरी आत्मा का संतोष न हो जाए, तब तक मुझे अपना कुल धर्म कभी नहीं छोड़ना चाहिए, फिर मैंने अन्य धर्मों की पुस्तकें पढ़नी शुरू कर दीं और मैंने मुसलमानी व क्रिश्चियन्स की पुस्तकें पढ़ीं। साथ ही अंग्रेज मित्रों के साथ पत्र व्यवहार किया। उनके समक्ष अपनी शंकाएं रखीं तथा हिंदुस्तान में मुझे जिनके ऊपर श्रद्धा थी उनके साथ भी पत्र व्यवहार किया। उसका फल ये हुआ कि मुझे शांति मिली। हिंदू धर्म में मुझे जो चाहिए वह मिल सकता है, ऐसा मन को विश्वास हुआ। गांधी जी ने कहा था कि मैं भारत के लिए काम करूंगा जिसमें निर्धन

लोग यह महसूस कर सकें कि वह देश है, वह भारत, जिसमें लोगों की कोई उच्च व निम्न श्रेणी नहीं है, वह भारत देश जिसमें सभी समुदायों के लोग मिलजुल कर रहते है। ऐसे भारत में जाति, अभिशाप, नशा और नशीले पदार्थों के सेवन का अभिशाप न हो, जहां महिलाएं व पुरुष समान अधिकार का लाभ उठा सकें।

निष्कर्ष :-

महात्मा गांधी जी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक व अनुकरणीय हैं जितने अपने वक्त में थे। गांधी जी का बचपन, उनके समाजिक एवं राजनीतिक विचार, सर्वोद्य, सत्याग्रह, अस्पृश्यता, स्वावलंबन एवं अन्य सामाजिक चेतना के विषय आज के युवाओं के शोध एवं शिक्षण के प्रमुख क्षेत्र हैं।

उनके अनुसार शांति की प्राप्ति प्रत्येक युवा का भावनात्मक एवं क्रियात्मक लक्ष्य होने चाहिए तभी उसकी ऊर्जा एवं उत्साह राष्ट्रीय हित में समर्पित होंगे।

संदर्भ –

1. विमल लश्करी, गांधी एवं अंबेडकर, पृष्ठ 91, 103
2. डॉ. आराधना, महात्मा गांधी के विचार और वर्तमान विश्व, पृष्ठ 55
3. रमेश सक्सेना, गांधी : एक अध्ययन, पृष्ठ 206

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com